P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-IV*December-2014
E: ISSN NO.: 2349-980X

वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा व उसकी महत्ता

एच0 आर0 कौशल
सहायक प्राध्यापक,
वाणिज्य संकाय,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय
एस0 ए0 जे0 परिसर,
अल्मोड़ा।

सारांश

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक और सामंजस्य पूर्ण विकास में सहयोग देती है, व्यक्ति के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करती है, उसे वातावरण से सामजस्य स्थापित करने में सहयोग देती है उसे जीवन और नागरिकता के कर्त्तव्यों और दायित्वों के लिए तैयार करती है और उसके व्यवहार, विचार और दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करती है जो समाज, देश और विश्व के लिए हितकर होता है। शिक्षा जीवन के सर्वागीण विकास हेतु अनिवार्य है। शिक्षा के बिना मनुष्य विवेकशील और शिष्ट नही बन सकता। विवेक से मुनष्य में सही और गलत चयन करने की क्षमता उत्पन्न होती है। शिक्षा ही मानव के प्रति मानवीय भावनाओं से पोषित करती है।

मुख्य शब्द : शिक्षा, चारित्रिक शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा, चरित्र–निर्माण

प्रस्तावना

हम लोग स्वयं को प्रायः शिक्षित मानते है और प्रतिदिन अपनी बात में 'शिक्षा' का प्रयोग करते है, किन्तु हम सब 'शिक्षा' का प्रयोग उसके वास्तविक अर्थ में बहुत कम करते है। हम प्रायः यह समझ बैठते है कि कुछ सूचनाओं का एकत्र करना ही शिक्षा है। कभी कभी तो हम केवल उपाधि (डिग्री) प्राप्त करते तक ही शिक्षा को सीमित कर देते है। शिक्षा क्या है? इसका स्वरूप कैसा होना चाहिए तथा उसके क्या–क्या उद्देश्य होने चाहिए, इन्हीं बिन्दुओं पर आगे विचार किया जा रहा है–

शिक्षा मानव जीवन की आधारशिला है। शिक्षा के पथ पर चलकर ही व्यक्ति सत्य की मंजिल पर पहुचता है। ज्ञान के माध्यम से ही मनुष्य अपने जीवन में फैले अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाता है। शिक्षा का अमृत ही मनुष्य को इस नश्वर रूपी संसार में अमरत्व प्रदान करता है। इसीलिए संसार का प्रत्येक विवेकशील प्राणी ईश्वर से यही प्रार्थना करता है –

असतो मा सद्गमयः
तमसो मा ज्योतिर्गमयः
मृत्योर्मा अमृतंगमय्।

'शिक्षा' के वास्तविक अर्थ को जानने से पहले शिक्षा की उत्पत्ति पर विचार करना आवश्यक है। –

शिक्षा अंग्रेजी शब्द के 'एजुकेशन' का हिन्दी रूपान्तरण है। एजुकेशन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'एडकेयर' शब्द से हुई है। जिसका अर्थ है 'अन्दर से बाहर निकालना'। शिक्षा शब्द संस्कृत की 'शिक्ष' धातु से निकला है जिसका अर्थ है सीखना और सीखना।

संकुचित अर्थ में शिक्षा का अर्थ है बालक की अन्तर्निहित शक्तियों (समताओं) का विकास करके उसे मजबूत मनुष्य बनाना, जिससे वह जीवन की चुनौतियों का सामना कर सके।

व्यापक अर्थ में शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो आजीवन चलती रहती है और जीवन के प्रत्येक अनुभव से उसके भण्डार में वृद्धि होती रहती है। शिक्षा ही मनुष्य में उचित–अनुचित, अच्छाई–बुराई में अन्तर करने की दृष्टि प्रदान करती है।

शिक्षा का एक अर्थ 'सीखना और सीखाना' भी है। शिक्षा ही मानव जीवन की अमावस को पूनम में परिवर्तित करती है तथा अतीत जीवन की सफलता एवं असफलता से परिचित कर भविष्य का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा के महत्व को हितोपदेश में इस प्रकार रेखांकित किया गया है –

माता शत्रुः पिता बैरी, येन बालों न पठितः।
सभामध्यें न शोभन्ते हंस मध्ये बो यथा।।

अर्थात् वह माता शत्रु है और पिता बैरी जो अपने बच्चे को शिक्षा से वंचित रखता है क्योंकि वह बालक विद्वानों की सभा में उसी तरह शोभा नहीं

पाता जिस प्रकार हंस के बीच में बगुला शोभा प्राप्त नहीं करता। जन्म के समय बच्चा बगुलों के समान ही होता है, लेकिन माता–पिता और शिक्षक मिलकर शिक्षा के द्वारा उसकी जन्मजात शक्तियों का सर्वांगीण विकास करके इसे हंस बनाते है जिससे इसका जीवन सफल बने।

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक और सामंजस्य पूर्ण विकास में सहयोग देती है, व्यक्ति के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करती है, उसे वातावरण से सामजस्य स्थापित करने में सहयोग देती है उसे जीवन और नागरिकता के कर्त्तव्यों और दायित्वों के लिए तैयार करती है और उसके व्यवहार, विचार और दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करती है जो समाज, देश और विश्व के लिए हितकर होता है।

शिक्षा केवल वही नहीं है जो बालक को विद्यालय में मिलती है बल्कि शिक्षा का कार्यक्रम जीवन भर चलता रहता है। मनुष्य अपने समाज, वातावरण एवं विभिन्न अनुभवों से कुछ न कुछ सीखता रहता है। प्रमुख शिक्षाशास्त्री जॉन डीवी शिक्षा को त्रिमुखी प्रक्रिया कहते है, उनका कहना है कि शिक्षा में शिक्षक और शिक्षार्थी के अलावा एक तीसरी चीज भी है, वह है कार्यक्रम। यहॉ कार्यक्रम से तात्पर्य समाज एवं वातावरण से है।

सच्ची शिक्षा के बारे में राष्ट्रपिता का कहना है कि ''जो शिक्षा चित की शुद्धि न करे, निर्वाह का साधन न बनाए तथा स्वतंत्र रहने का हौसला और सामर्थ्य न उपजाए, उस शिक्षा में चाहे जितनी भी जानकारी का खजाना, तार्किक कुशलता और भाषा पांडित्य मौजूद हो वह सच्ची शिक्षा नहीं, और उन्होंने आगे कहा है कि जिस शिक्षा में त्रिविधि–आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मुक्ति मिलती है वही सच्ची शिक्षा है।'' गाँधी जी के अनुसार विद्यार्थी को चरित्रवान बनाना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है उन्होंने कहॉ है कि ज्ञान साधन है चारित्र साध्य नहीं।

शिक्षा से मनुष्य अपने परिवेश के प्रति जाग्रत होकर कर्त्तव्याभिमुख हो जाता है। **'स्व'** से **'पर'** की ओर अग्रसर होने लगता है। निर्बल की सहायता करना दुःखियों के दुःख दूर करने का प्रफस करना, दूसरो के दुःख से दुःखी हो जाता और दुसरो के सुख से स्वंय सुख का अनुभव करना जैसी बाते एक शिक्षित मानव में सरलता से देखने को मिल जाती है।

स्वामी विवेकानन्द जी ने भी चरित्र निर्माण को ही शिक्षा का अंतिम लक्ष्य माना है। उन्हीं के शब्दों में ''हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है; मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।'' स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा के महत्व को स्वीकारते हुए कहॉ है कि भारत की निर्धनता का एक कारण अशिक्षा है। स्वामी विवेकानन्द जी ने शिक्षा के महत्व को निम्न शब्दों में व्यक्त किया है ''जो शिक्षा जनसाधारण को जीवन संघर्ष के लिए तैयार नही कर सकती, जो उनकी चारित्र शक्ति का विकास नही करती, जो मूल–दया का भाव और सिंह का साहस पैदा नही करती, ऐसी शिक्षा का क्या लाभ''

भारतीय शिक्षाविदों, दार्शनिकों व समाज सुधारकों ने चरित्र निर्माण को शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य माना है, गॉधी जी अपने आत्मकथा में लिखा हे 'मैने हदय की संस्कृति या चरित्र निर्माण को सदा प्रथम स्थान दिया है तथा चरित्र निर्माण को शिक्षा का उपयुक्त आधार शिला माना है।''

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में धीरे–धीरे चरित्र निर्माण जैसे उच्च मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है। डोनेशन, ऊँचे शिक्षण शुल्क के कारण शिक्षार्थी इस उद्देश्य से विमुख होता जा रहा है। आज विद्यार्थी में मन, वचन और कर्म में पवित्रता व एकरूपता नहीं दिखायी पड़ती है। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि उच्च जीवन मूल्य वाले यशस्वी, संयमी तथा त्यागी शिक्षकों की संख्या दिन–प्रतिदिन घटती जा रही है।

विद्यार्थी को स्वावलम्बी बनाने के लिए रोजगारोन्मुखी शिक्षा का होना अति आवश्यक है। शिक्षा व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिससे विद्यार्थी अपने पैरों पर खड़ा हो सके। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण जापान देश का है जहॉ विद्यार्थियों को कक्षा शिक्षण के साथ–साथ व्यवहारिक शिक्षण की शिक्षा भी दी जाती है। जिससे विद्यार्थी शिक्षा समाप्त करते ही सीधे रोजगार प्रारम्भ करता है।1986 की नयी शिक्षा को रोजगार के साथ जोड़ने पर बल दिया है। आज शासन का अधिकतम प्रयास है कि व्यावसायिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल कर रोजगार सृजन की सम्भावनाओं को बढ़ाया जाय। जिससे वर्तमान में कुछ राज्यों द्वारा शिक्षित बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता देना शुरू किया है, लेकिन यह भत्ता ऊँट के मूँह में जीरे के समान है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार जो शिक्षा देश प्रेम की प्रेरणा नहीं देती। वह राष्ट्रीय शिक्षा नहीं कही जा सकती। राष्ट्र कवि मैथलिशरण गुप्त जी ने देश–प्रेम का वर्णन इस प्रकार किया है–

भरा नहीं जो भावों से, बहली जिसमें रस धार नहीं,
हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

देश प्रेम व राष्ट्रीयता का विकास शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए। विद्यालयों, महाविद्यालयों में विश्वविद्यालयों में एन.एस.एस. व एन.सी.सी.को अनिवार्य करके इस लक्ष्य को प्राप्त करने का सार्थक प्रयास करना चाहिए। विद्यार्थियों में देश प्रेम की भावना का विकास करने के लिए भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, सुभाष चन्द्र बोस जैसे शहीदों एवं स्वामी विवेकानन्द, महर्षि दयानन्द एवं श्री अरविन्दों घोष जैसे महापुरूषों का जीवन चरित्र पाठयक्रम में अनिवार्य रूप से शामिल करना चाहिए।

शिक्षा का उद्देश्य मानवीय आध्यात्मिक गुणों का विकास करना भी होना चाहिए। भारतीय मनीषियों ने सफल मानव जीवन के लिए धर्म, अर्थ,काम और मोक्ष प्राप्त करना आवश्यक बताया है। महायोगी श्री अरविन्दो घोष के अनुसार ''प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ दैवयी अंश जरूर होता है, शिक्षा के द्वारा इस दैवीय अंश को खोजना, विकसित करना तथा पूर्णता की ओर ले जाता है''।

सच्ची शिक्षा वहीं है जो व्यक्ति में 'सर्वधर्म समभाव वसुधैव–कुटम्बकम' की प्रवत्ति जागृत करे। भारत विश्व का एकमात्र सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है जहाँ सभी धर्मों के लोग एक साथ मिल–जुल कर रहते है। कभी–कभी राजनीतिक दुराग्रहों एवं आपसी समझ एवं विश्वास में कमी के कारण एक–दुसरे से खिन्न हो जाते है। शिक्षा के माध्यम से ही ऐसा घृणित कार्यों एवं सम्प्रदायिकता व अस्पृश्यता जैसी घिनौने कार्यो को दूर किया जा सकता है तथा सभी

धर्मो के प्रति प्रेम, श्रृद्वा, भाव व नैतिकता के भाव उत्पन्न किये जा सकते है।

परन्तु आज शिक्षा का अर्थ बदल रहा है। शिक्षा मौलिक आंकाक्षा की चेरी बनती जा रही है। व्यावसायिक शिक्षा के अन्धानुकरण में छात्र सैद्धान्तिक शिक्षा से दूर होते जा रहे है। रूस की क्रान्ति, अमेरिका की क्रान्ति, समाजवाद, पूँजीवाद, राजनैतिक व्यवस्था, सांस्कृतिक मूल्यों आदि की सामान्य जानकारी भी व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों को नहीं है। यह शिक्षा का विशुद्ध रोजगारकरण है। शिक्षा के प्रति इस प्रकार का संकुचित दृष्टिकोण अपनाकर विवेकशील नागरिकों का निर्माण नहीं किया जा सकता। भारत जैसे विकासशील देश में शिक्षा रोजगार का साधन न होकर साध्य हो गयी है। इस कुप्रवृत्ति पर अंकुश लगाना अनिवार्य है। जहाँ मानवकीय के छात्रों पत्रकारिता, साहित्य–सृजन, विज्ञापन, जन संम्पर्क इत्यादि कोर्स भी कराया जाना चाहिए ताकि उन्हें रोजगार के लिये भटकना न पड़े, वहीं व्यवसायी कोर्स करने वाले छात्रों को मानवकीय के विषयों का अध्ययन अवश्य कराना चाहिए ताकि समाज को विवेकशील नागरिक प्राप्त होते रहें तभी समाज में संतुलन बना रह पायेगा।

अंतः आज आवश्यकता इस बात की है विद्यार्थी को नैतिकता, चरित्रिक दृढ़ता, आध्यात्मिकता, देश प्रेम एवं राष्ट्रीयता आदि गुणों को विकसित करने की शिक्षा दी जाए, जिससें विद्यार्थियों में उचित–अनुचित, अच्छे–बुरे में अन्तर करने की सोच विकसित होगी और सत्य के मार्ग पर अग्रसर होगें और उनमें स्वालम्बन एवं ''वसुधैव कुदुम्बकम'' वैचारिक प्रखरता के भाव पैदा होगें। किसी कवि ने शिक्षा की महत्ता के विषय में ठीक ही कहा है–

सत्य का मार्ग दिखाती है, शिक्षा,
अमावस को पुनम बनाती है शिक्षा,
अच्छे–बुरे में भेद बताती है, शिक्षा,
पाप को पुण्य बनाती है, शिक्षा,

आज शिक्षा के स्तर एवं मूल्यों में आ रही गिरावट एवं छात्र–छात्राओं में परिलक्षित होती हुई चारित्रिक गिरावट के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा की महत्ता क्या है? आगे विचार करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. पौढ़ और आजीवन शिक्षा– डॉ0 मदन सिंह– भारतीय पौढ़ शिक्षा संघ दिल्ली।
2. शिक्षा मनोविज्ञान–एस0माथूर–श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
3. भारत को विवेकानन्द की देन–डॉ0 करण सिंह स्वामी विवेकानन्द और उनका अवदान
4. शिक्षा–अभिकर्ता का विकास– एस0के0 मंगल एवं पी0डी0 पाण्डे–अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा–2
5. अग्निमंत्र स्वामी विवेकानन्द–जीवन एवं चिन्तन– स्वामी ब्रह्ममानन्द–राकृष्ण मठ घन्तोली–नागपुर
6. कर्म योग– स्वामी ब्रह्ममानन्द–राकृष्ण मठ घन्तोली–नागपुर
7. उदयमान भारतीय समाज के शिक्षक–डॉ0 गिरीश पचौरी, इण्टर नेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ
8. उदयमान भारतीय समाज के शिक्षक– एन0आर0स्वरूप सक्सेना, डॉ0शिल्पा चतुर्वेदी आर0 लाल बुक डिपों–मेरठ।
9. राजभाषा भारती– राकेश शर्मा 'निशीथ' राजभाषा विभाग–गृहमंत्रालय नई दिल्ली।
10. प्राच्च और पाश्चात्य–स्वामी विवेकानन्द।